अध्याय दुसरा

मेहरून्निसा परवेज के साहित्यका परिचय

अध्याय क्रमांक 2

मेहरून्निसा परवेज के साहित्य का सामान्य परिचय

मेहरून्निसा परवेज हिन्दी की एक महत्वपूर्ण लेखिका है। आप अत्यंत संवेदनशील और प्रगतिशील विचारों की महिला है। साथ ही नारी स्वातंत्र्य की प्रबल हिमायती है।

आपने कहानी, उपन्यास, आत्मचरित्र सभी विधाओं को सजाया हैं। मध्यप्रदेश एवं हरियाणा में तो इनकी कई पुस्तके पाठयक्रम में रखी गयी है। आदिवासियों की गरीबी एवं शोषण की समस्यापर पैनी दृष्टी तथा सामान्य गरीबों के चित्रण को विशेष रूप से सराहा गया है।

आप नारी स्वातंत्र्य की प्रबल हिमायती है, इन्ही विशेषताओं की झाँकी, आपकी कथाओं और उपन्यासों में दिखायी देती है। आपने 'पाँच कहानी संग्रह', 'चार उपन्यास', कुछ रिपोर्ताज का साहित्यसृजन किया है। अब हम मेहरून्निसा के महत्व पूर्ण कृतियों की क्रमशः संक्षेप में चर्चा करेंगें।

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों का संक्षिप्त परिचय -

आदम और हव्वा -

परवेजजी का यह प्रथम कहानीसंग्रह है, जिसमें उन्नीस कहानियाँ संगृहीत हैं। संग्रह का मूल स्वर आर्थिक विषमता है। इन कहानियों में मानवसंम्बधों के उस स्वरूप का विवेचन है जो, एक 'शनाख्त' है। 'अंधश्रध्दा' की जडें हमारे समाज में इतनी गहराई में जाकर जम गई है कि उसे जड से उखाड फेंकना हमें असंभव ही लगता है। गरीबी तथा उससे निर्माण समस्या, अंधश्रध्दा महानगरीय समस्या, विधवा समस्या, दहेज समस्या आदि का चित्रण अत्यंत सुंदर बन पडा है।

'त्योहार', 'सीढियों का ठेका', 'शनाख्त' मुस्लिम परिवार की गरीबी की कहानियाँ हैं, जिसमें इन्सान की मजबूरी, गरीबी की हालत क्या

कुछ करने के लिए बाध्य नहीं करती। बेटी के दहेज जुटाने के लिए या एक साडी के जकात के लिए भी स्त्री को लाचार होना पडता है।

'सिर्फ एक आदमी', 'चमडे का खोल', 'भोगे हुए दिन', 'विद्रोह', आदि कहानियाँ महानगरीय समस्या का चित्रण करती हैं। छोटे घर के कारण लोगों की भीड बढ जाती है, इन्सान अंदर बाहर की भीड से तंग आ गया है। वृध्दों की, रिटायर्ड लोगों की व्यथा तथा समस्या बढने लगी है। पैसे की जरूरत के लिए कमानेवाली बेटी की चिंता मायकेवाले नहीं करते इनका दर्द कोई नहीं जानता और मजबूरी यही कि, वे विद्रोह भी नहीं कर पाती।

'उसका घर', 'खाली आँखों की पीडा', 'बंद कमरों की सिसकियाँ', 'आदम और हव्वा', 'वीराने', 'तिसरा पैंच', 'एक और सैलाब', 'बजर दुपहर', 'जाने कब', 'छोटे मन की कच्ची धूप' आदि, नारीपर पुरुष के एकाधिकार की प्रवृत्ति का अंकन करनेवाली कहानियाँ हैं। इसमें स्त्री के अनेक दुःखों को स्वर देने का प्रयत्न किया है। पुरूष तो अपने मन को रिझाने में सतर्क रहते हैं पर अपनी पत्नी की इच्छा आकांक्षाओं का ख्याल तक नहीं करते पुरूष को अपना व्यवहार उचित ही जान पडता है। पुरूषों की इन प्रवृत्तियों का चित्रण करना ही कहानियों का उद्देश है। लेखिका इसमें सफल हो गयी है।

गलत पुरूष –

मेहरून्निसा परवेजजी के इस कहानीसंग्रह में सोलह कहानियाँ संग्रहित हैं। प्रस्तुत संग्रह में विषय की विविधता है।

'टोना' अंधश्रध्दा का चित्रण करनेवाली कहानी है। 'दूसरी अर्थी', 'पाँचवी कब्र', 'पसेरी भर जवानी' ये कहानियाँ आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त, दुःखी लोगों के लिए आदर्श और मैतिकता का कोई महत्व नहीं होता, ये बताती है।

पुरूष सत्ता बलवत्तर इस समाज में नारी के मत की कोई किमत नही होती। वह पुरूष की दासी मात्र है, जिसका काम जिंदगीभर डाँट फटकार, अपमान सहना है। 'आकृतियाँ और दिवारें', 'रिस्ते', 'बीच का दरवाजा', 'साल की पहली रात', ये कहानियाँ इस तथ्य को उजागर करती हैं।

'बिके हुए क्षण', 'सलाखों में फँसा आकाश', कहानी में बताया है कि, अपने कहलानेवाले रिस्ते भी खुदगर्जी में अंधे होकर धोका देते है, माँ भी अपनी बेटी के हिस्से का सुख लेने में गैर नहीं मानती।

'बँटवारे की फाँस', 'मुंडेरों की दुपहर', 'गलत पुरूष', स्त्री के अंतरमन दर्द की कहानियाँ हैं, जो कभी नियती द्वारा तो कभी इन्सान द्वारा प्रेम में धोका खा चूकी है। कहानी का विचार प्रश्न सशक्त है। प्रेम प्रसंगो से कहानी रोचक बनी है। कहानियाँ समस्याप्रधान बनी हैं।

टहनियोंपर धूप -

प्रस्तूत कहानीसंग्रह में बारह कहानियाँ हैं। इस संग्रह की विशेषता है कि, हर कहानी में दर्द की लकीर है, जो अपने आपमें अलग पहचान रखाकर भी एक ही जंजीर में बँधी जाती है।

'हत्या एक दोपहर की', 'खामोशी की आवाज', 'टहनियोंपर धूप', 'नंगी आँखोवाला रेगिस्तान', कहानियाँ नारी हृदय का आक्रंदन है, जो अपनी पति द्वारा छली गयी है, जिन्हें स्नेह के बदले हमेशा पतिकी हिकारत ही मिली, चाहे पति हो या प्रेमी, जिन्होंने उन्हें समझने में गलती की है।

'गिरवी रखी धूप', 'खूरचन', में रिटायर्ड वृध्दों की समस्या को उजागर किया हैं। 'नया घर', 'आतंक भरा सुख', 'गरीबी पर चोट करनेवाली कहानियाँ हैं, जिसके पात्र झोंपडी के सपने भी पूरे कर नही पाते, जिनके पास कफन के लिए भी पैसे नही है।

'कयामत आ गयी', 'गुरूमंत्र', कहानी में पुरूष केवल स्त्री को भोगवस्तू मानकर कैसे जी लेता है, यह बताया गया है।

'पाँच जन्म पाँच रूप' तथा 'आरजू के फूल' पति का पत्नी के प्रति प्रेम प्रकट करनेवाली कहानियाँ हैं।

फाल्गुनी –

इस कहानीसंग्रह में सात कहानियाँ संगृहीत हैं। इसकी विशेषता यह है कि, ये सारी कहानियाँ नायिकाप्रधान हैं तथा वे अपेक्षाभंग की आग में जलती है।

'आकाशनील', 'रावण', 'चुटकी भर समर्पण', 'कानीबाट', 'बौना मौन', 'ओंस में डुबा गुलाब', 'फाल्गुनी' ये कहानियाँ स्त्री के अलग-अलग दुःखो का दस्तावेज हैं। नारी दुःख के अनेक पहलू है, जिसे केवल स्त्री ही समझ सकती है, इस कहानीसंग्रह के संबंध में लेखिका का वक्तव्य ही इनकी पहचान कराता है "मेरी कहानियाँ हादसों का जमघट है जो कण-कण जमकर पहाड हो गया है। उम्र का वह उतार चढाव है, हादसों की वह धूप छाँव है जो उम्र के साथ घटती बढती है। जिन्दगी के बेतरतीब दिन, जिन्हे मेरी कलम ने हमेशा सही करना चाहा, पर जिन्दगी की यह पुस्तक कभी सही नहीं हुई, क्योंकि उसके कई-कई पृष्ठ गुम हो गये, नष्ट हो गये।[1]"

अन्तिम चढाई –

1982 में प्रकाशित यह कहानीसंग्रह नामकी तरह 'अन्तिम चढाई' लगता है, जिसमें सात कहानियाँ संगृहीत हैं।

'अंन्तिम चढाई', 'अयोध्या से वापसी' कहानी की नायिक पतिद्वारा छली गयी है। पर लेखिकाने अपने उद्देश्य को इनके द्वारा स्पष्ट किया कि, औरत को अब हिम्मत से काम लेना है, आत्मनिर्भर होना जरूरी है, भावूकता में बहकर अपने को वह जाने नहीं देना है तो 'अडिग ' रहकर मुकाबला करना है।

'बूँद का हक', 'अपनी जमीन' नारी मन की ममता तथा मातृत्व की प्यास स्त्री को कैसे मजबूर कराती है, गलत से भी समझौता कराने के लिए, इसका चित्रण करनेवाली कहानियाँ हैं।

'पति को थामना है, तो सुन्दर होना जरूरी है तथा अपने मुठ्ठी में ही पति को बाँधना आवश्यक है यह 'गुरूमंत्र', 'गुरूमंत्र' कहानी में दिया है।[2]

'जमाना बदल गया है।' नये पुराने पिढी का संघर्ष चित्रण करनेवाली कहानियाँ हैं।

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यास साहित्य का संक्षिप्त परिचय -

आँखों की देहलीज -

यह एक ऐसे नारी की कहानी है जिसे मोहके एक क्षण की किमत पूरी जिंदगी की खुशियाँ देनी पडती हैं। तसमीन जो माँ बनने के काबील नही होती इसलिए उदास होती है। मायके में जावेद नाम के पुरूष से मुलाकात होती है, माँ भी कुछ स्वार्थ हेतू बेटी को उत्तेजना देती है, मतलब बच्चा हो यह स्वार्थ। लेकिन यह गलत बात के लिए तसमीन अपने आपको माफ नहीं करती, पति के साथ छल करना उसे गवाँरा नही, इसलिए मरना चाहती है पर उसमें से भी वह बच जाती है, पर वह निश्चित कर लेती है, इतने बडे झूठ को लेकर जीना मुश्किल हो रहा है, तब वह अपनी सहेली जमेला को अपने पति के जीवन में छोडकर चली जाती है। लेखिकाने बताने का प्रयास किया है कि, शर्म, हया, इज्जत यह सब देहलीजे है, उसका उल्लघन हो गया तो औरत का जीना दुश्वार हो जाता है। ये दिल की आँखों के बंधन भी नारी श्रेष्ठ तथा पवित्र मानती है। पुरूष के लिए ये बंधन कोई माने नहीं रखाते, यह भी सोचने लायक बात है।

कोरजा -

यह मुस्लिम परिवेशापर लिखा उपन्यास है। गरिबी इन्सान को कोरजा {अंधा} बनाती है। मुस्लिम, आदिवासी समाज का बडा ही वास्तववादी चित्रण हुआ है। रीति-रिवाज, अंधश्रध्दा अनेक समस्या इसमें चित्रित हैं। साजो खाला, नानी, रब्बो आपा, कम्मो, नस्सीम, नस्सीम की माँ ये और परिस्थिती के शिकार है, जो अपने आपपर होनेवाले अन्याय चुपचाप सहती है। रहने के

लिए घर चाहिए इसलिए विधवा साजो खाला को बुढे जुम्मन के यहाँ जाना पडता है तो तस्लीम की माँ तलाक के डर से पति का अत्याचार रातदिन सहती है। रब्बो आपा जमजेद के वासना का शिकार होती है तो एहसान से प्रेम करके भी वह प्यार सफल नहीं होता और मजबूर होकर शादी करनी पडती है। जिंदगी चिति वक्त इन छोटी-छोटी मौत से इन्सान को गुजरना पडता है, जानबूझकर अन्धा बनना पडता है।

'उसका घर '-

खिश्चन परिवेशपर लिखा उपन्यास है। जिसमें एक परिवार के टूटने बिखरने की मार्मिक कहानी कही गई है। उपन्यास की नायिका की ऐलमा की मर्मकथा गहरे तक छू लेती है। ऐलमा का पति उसे तलाक देता है। ऐलमा का भाई व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए उसे अपने बॉस को सौंपता है, शांत स्वभाव की ऐलमा परिस्थिती के सामने लाचार है। ऐलमा का इस्तेमाल कर भाई अपना घर बसाता है, पर उसका घर ऐलमा को नहीं मिलता। लेखिकाने रिश्तों के खोखलेपन को बहुत सुंदर ढंग से चित्रित किया है।

' अकेला पलाश ' -

यह उपन्यास भी नायिका प्रधान है, जो पलाश की तरह वातावरण में रंग तो भरती है पर उन फूलोंको जुडे में सजाया नहीं जाता। तहमीना भी पति, बच्चा होकर भी अंदर से अकेली है। उसके अपनोंने ही स्वार्थ के लिए उसका इस्तेमाल किया है। औरत के हिस्से में झूठ, फरेब, धोका इसके सिवाय कुछ आता ही नहीं, मानो यही उसकी नियती ही है। प्रेम, स्नेह ऐसी पवित्र, सुंदर चिजे भी उसे मिलती है, वह भी भ्रष्ट बनकर। ऐसे वक्तपर औरत यही सोचकर अपने दिल को तसल्ली देती है कि, 'अकेले पलाश' की तरह अकेले ही रहना है, जो पलाश लाल चटक रंग का, सुंदर है पर उसे कोई भी नहीं चाहता।

मेहरून्निसाजी ने जितना भी साहित्य लिखा वह नारी जीवन के सुख-दु:ख का लेखा जोखा है।